शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ३४ : नई दिल्ली : २५ नवम्बर से १ दिसम्बर २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५७ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा आदि श्रमणी १०२, सर्व १५९ जसोल में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर १९ नवम्बर से प्रारंभ हो चुका है। इस आठ दिवसीय शिविर में ५९ विदेशियों सहित ७१ व्यक्ति संभागी बने हुए हैं। चतुर्मास की परिसंपन्नता के साथ आचार्यवर २९ नवम्बर को जसोल से मंगल विहार कर देंगे। यात्रा पथ पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित है।

प्रथम संस्करण : 2011
द्वितीय संस्करण : 2013

समझो पापों को-१७

आचार्य महाश्रमण

मूल्य : 400/-

आर्हत् वाङ्मय में कहा गया है--**'अणुमायं पि मेहावी, मायामोसं विवज्जए'**--मेधावी पुरुष अणुमात्र यानी थोड़ी-सी भी माया और मृषा का प्रयोग न करे। अठारह पापों में सतरहवां पाप--मायामृषा पाप। इसमें दो पापों का मिश्रण है माया और मृषा। वैसे तो दोनों पाप अलग-अलग रूप में अठारह पापों में उल्लिखित हो चुके हैं। मृषावाद पाप भी आ चुका है और माया पाप भी आ चुका है, किन्तु सतरहवें पाप में दो पापों का मिश्रण बताया गया है, माया युक्त मृषा बोलना। केवल झूठ ही नहीं, साथ में माया का भी प्रयोग करना।

ऋजुता का विलोम शब्द है माया। धर्म के क्षेत्र में, अध्यात्म की साधना में ऋजुता का बड़ा महत्त्व होता है। जो व्यक्ति ऋजु होता है, उसका पाप से कुछ बचाव हो सकता है। वह व्यक्ति निर्वाण को प्राप्त करता है, जिसके जीवन में धर्म होता है। धर्म उसके जीवन में होता है, जिसका हृदय शुद्ध होता है और हृदय उसका शुद्ध होता है, जो ऋजुभूत होता है। जहां कथनी और करनी में विसंवाद नहीं होता, भाव ऋजुता, भाषा ऋजुता, काय ऋजुता होती है, वहां माया नहीं होती। मुंह से कुछ कहना तथा करना कुछ और, यह संवाद नहीं है, विसंवाद है। व्यक्ति को सच्चाई का प्रयोग करना चाहिए, सरलता रखनी चाहिए।

गुरु के सामने तो ऋजुता होनी ही चाहिए। अन्य लोगों के साथ भी ऋजुतापूर्ण व्यवहार होना चाहिए। रत्नाकर पंचविंशिका में कहा गया--

किं बाललीला-कलितो न बालः, पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः?
तथा यथार्थं कथयामि नाथ! निजाशयं सानुशयस्तवाग्रे।।

प्रभो! मैं अपनी कुछ बातें आपको बता रहा हूं, कमियां बता रहा हूं उस प्रकार बता रहा हूं, जैसे बालक मां-पिता के सामने निर्विकल्प होकर बात कह देता है। यह सरलता की बात है। कई बार साधु से भी प्रमादवश, छद्मस्थतावश कुछ माया और कदाचित् मृषा का भी प्रयोग हो सकता है। छद्मस्थ के कुछ लक्षण हैं। जो छद्मस्थ होता है, वही माया कर सकता है, वही मृषावाद कर सकता है। केवलज्ञानी तो कभी माया नहीं करता और मृषा का प्रयोग भी नहीं करता। साधु का कर्तव्य है कि वह विशेष रूप से माया-मृषा से मुक्त रहे और यथार्थ के पथ पर चले। मैं तो गृहस्थों से भी कहना चाहूंगा कि सरलता का प्रयास करना चाहिए। परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने संभवतः एक बार फरमाया था कि

परम पूज्य कालूगणी उस साधु को ज्यादा पसन्द करते या उसे ज्यादा वत्सलता देते जो सरल होता और आचार सम्पन्न होता। सरल व्यक्ति के प्रति आकर्षण बढ़ता है। जो कुटिलता करने वाला हो, उसके प्रति आकर्षण कैसे बढ़े?

एक बुढ़िया पैदल जा रही थी। एक पोटली उसके सिर पर थी। एक युवक पास से गुजरा।

बुढ़िया ने पूछा--'कहां जा रहे हो?'

युवक ने कहा--'माजी! मैं तो अमुक गांव जा रहा हूं।'

बुढ़िया ने कहा--'मैं भी वहीं जा रही हूं, यह मेरी पोटली तुम ले लो। मुझे थोड़ी राहत मिल जाएगी। अगले गांव मुझे मिल जाना, पोटली वापिस दे देना।'

युवक ने कहा--'तुम्हारा बोझ मैं क्यों उठाऊं?' युवक थोड़ा आगे बढ़ गया। बाद में युवक के मन में आया कि मैंने ना क्यों कही? वह पोटली दे रही थी, पोटली ले लेता और लेकर भाग जाता। कोई विशेष चीज होती तो मुझे मिल जाती। सोचा, यहीं रुक जाऊं और बुढ़िया से पोटली मांग लूं। वह आगे जाकर ठहर गया, बुढ़िया भी वहां पहुंची।

युवक बोला--'लाओ मांजी! पोटली मुझे दे दो। मैं ले चलता हूं।'

बुढ़िया बोली--'बेटा! अब नहीं दूंगी पोटली।'

युवक--'क्यों नहीं दोगी मां!'

बुढ़िया ने कहा--'जो तुमको कह गया, वह मुझे भी कह गया। अब तुम्हारे मन की भावना खराब हो गई है, अब तुम्हें पोटली नहीं दूंगी।' संसार में ठगी चलती है।

एक ग्रामीण राजमार्ग पर एक ढाबा चलाता था। वह जोर-जोर से बोल रहा था। आओ गरमागरम पूड़ियां खाओ। एक कोई राहगीर जा रहा था। सोचा, यहीं भोजन कर लूं, आगे कहां मिलेगा? यहां तो गरमागरम पूड़ियां मिलेंगी। वह वहां जाकर बैठा। जितना निर्धारित मूल्य था, दे दिया। उस ढ़ाबे वाले आदमी ने छह-सात पूड़ियां परोसीं। उन पूड़ियों में दो तो गरम पूड़ियां थीं, बाकी चार-पांच पूड़ियां तो बिल्कुल ठण्डी-बासी थी।

राहगीर बोला--'भाई! तुमने झूठ बोला। तुमने तो कहा था कि गरमागरम पूड़ियां खाओ। इतनी पूड़ियां तो ठण्डी पड़ी हैं।'

ढ़ाबे का मालिक बोला--'मैने झूठ क्या बोला? ध्यान से सुना तुमने, मैंने क्या कहा था? मैंने कहा था गरमागरम पूड़ियां खाओ। गरमागरम का मतलब है-गरम और अगरम। कुछ गरम खाओ, कुछ ठण्डी खाओ।' मायावी आदमी ठगने का प्रयास करते हैं, परन्तु यह ठगी आत्मा को मलिन बनाने वाली होती है।

सत्य को महान तप कहा गया--

सांच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप।
जांके हिरदै सांच है, ता हिरदै प्रभु आप।।

जैन वाङ्मय में तो यहां तक कहा गया--**'सच्चं भयवं'** सत्य भगवान है। **'सच्चं लोयम्मि सारभूयं'** सच्चाई लोक में सारभूत है। जो गृहस्थ हैं, वे भले नौकरी करते हों, व्यापार करते हों, कोई भी धन्धा करते हों। धंधे के सिवाय भी व्यवहार चलता है, उसमें यह प्रयास होना चाहिए कि कपट का प्रयोग न हो, माया और मृषा का प्रयोग न हो। लक्ष्य बड़ी चीज है, जिस चीज का लक्ष्य बन जाता है और फिर पुरुषार्थ होता है तो आदमी उस दिशा में आगे बढ़ सकता है। नींद में सोया रहे, कोई लक्ष्य भी नहीं है, तब तो विकास होना भी असंभव या कठिन है। व्यक्ति लक्ष्य बनाए कि मुझे मायामृषा पाप

से बचना है। माया और मृषा दोनों पापों को बताने के बाद पुनः दोनों पाप के साहचर्य की ओर संकेत किया गया है, इसमें एक यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि झूठ पाप है, किन्तु माया युक्त झूठ बोलना और ज्यादा बड़ा पाप या सघन पाप होता है। अध्यात्म की साधना में माया का स्थान नहीं है। माया युक्त मृषा को भी स्थान नहीं है। साधु के लिए तो यह ध्यातव्य है कि कष्ट भले आ जाए, परन्तु गलत बोलने से साधु को बचना चाहिए। झूठ बोलकर एक बार अपना काम निकाल लेना, कोई ज्यादा फायदे वाली बात नहीं होती। ठीक कहा गया--

भूल छिपाना पाप है, करो निवेदन साफ।
यहां बचोगे पर नहीं, आगे होगी माफ।।

कोई भूल हो गई हो तो गुरु आदि के द्वारा पूछे जाने पर जरूर बता दो कि मुझसे यह भूल हो गई है। भूल को छिपाने का प्रयास करोगे तो यहां कदाचित् बच भी जाओगे, किन्तु आगे कैसे बच पाओगे? वहां पाई-पाई का हिसाब होता है। इसलिए भूल का परिष्कार करने का प्रयास करना चाहिए। जैन वाङ्मय में कहा गया--

अणायारं परक्कम्म, नेव गूहे न निण्हवे।
सुई सया वियडभावे, असंसत्ते जिइंदिए।।

कभी कोई अनाचार का सेवन हो जाये तो उसे छिपाओ मत, अपलाप मत करो। पवित्र हृदय से निस्कपट भाव से स्पष्टतया, उसे स्वीकार कर लो। स्वीकार कर लेना भी एक प्रकार से किए हुए दोष पर चोट पहुंचाना है कि मुझसे यह भूल हो गई है। व्यक्ति को अपनी भूल को यथास्थान स्वीकार करने में संकोच नहीं करना चाहिए। भूल को स्वीकार करना बड़ी बात है। जिन्दगी में भूलें तो हो सकती हैं। कभी जानते हुए भी हो सकती हैं और कभी अनजान में भी हो सकती हैं। शास्त्रकार ने कहा--**'बीयं तं न समायरे'**--एक बार जो भूल हो गई है, दुबारा उस भूल की आवृत्ति मत करो, पुनरावृत्ति मत करो। भूल का परिष्कार करने से जीवन में विकास होता है। ऋजुता एक ऐसा सद्गुण है, जो आत्मा को निर्मल बनाने वाला है। व्यक्ति इस माया-मृषा के पाप से बचने का प्रत्यन्न करे, सरलता का अभ्यास करे तो वह आत्म-कल्याण की दिशा में आगे बढ़ सकता है।"

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जसोल में

कल्याणकारी है अहिंसा की साधना

१४ नवम्बर। कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा। गुजरातियों के लिए नया वर्ष। आज प्रातः (पश्चिमरात्रि में) गुजरात निवासी और प्रवासी व्यक्ति बड़ी संख्या में पूज्यवर के प्रवास स्थल पर पहुंचे। पूज्यवर ने बृहत् मंगलपाठ सुनाया। नववर्ष पर पूज्यवर के मुखारबिन्द से मंगलपाठ का श्रवण कर वे लोग धन्यता की अनुभूति कर रहे थे।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमपावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दानों में अभयदान को श्रेष्ठ कहा गया है। अभयदान दुनिया में एक बड़ा दान है। साधु में अभयदान विशेष रूप से होना चाहिए। वह अपनी ओर से किसी को तकलीफ न दें। गृहस्थ भी यह सोचे कि मैं जीवन में अहिंसा का प्रयोग कितना कर सकता हूं। कैसे अनावश्यक हिंसा से अधिकाधिक बच सकता हूं। अहिंसा की साधना कल्याणकारी होती है।'

नववर्ष के अवसर पर गुजरात से समागत व्यक्तियों को संबोधित करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा--'गुजराती लोगों के लिए आज नए वर्ष का प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर गुजरात से सम्बद्ध कितने-कितने श्रावक-श्राविकाएं प्रतिवर्ष गुरुकुलवास में पहुंचते हैं। मेरे देखने में परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के समय से यह क्रम चला आ रहा है। मानों अपने घर में दीवाली मनाने की बात को गौण कर ये लोग गुरुसन्निधि में पहुंचते हैं। नववर्ष के प्रारंभ के अवसर पर कोई अच्छा संकल्प स्वीकार करें तो पूरे वर्ष के लिए एक मंगल बात हो सकती है। जीवन में यथासंभव कायिक, वाचिक व मानसिक अहिंसा की साधना चलनी चाहिए, झूठ से बचने का प्रयास रहना चाहिए। इस प्रकार यदि जीवन में त्याग-संयम के द्वारा अध्यात्म की दिशा में प्रस्थान होगा तो जीवन में मंगल स्थापित हो सकेगा।

पूज्यवर ने आगे कहा--'वर्ष आता है और चला जाता है। प्रतिदिन व्यक्ति के जीवन का एक-एक दिन कम होता जाता है। इसलिए व्यक्ति को अधिकाधिक धर्माराधना के द्वारा पवित्र जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए। गुजराती श्रावक-श्राविकाओं में श्रद्धा है, भक्ति है, तत्त्वज्ञान का कुछ विकास भी है। यह उत्तरोत्तर प्रर्वद्धमान रहे। जीवन में अध्यात्म की साधना के द्वारा आत्मा का उत्थान किया जा सकता है और जीवन में मंगल को स्थापित किया जा सकता है।'

कुछ दिनों पूर्व दिवंगत मुम्बई प्रवासी श्री मुकुलभाई जवेरी के संदर्भ में पूज्यवर ने कहा--'गुजरात के लोग आए हैं, किन्तु इस बार एक चेहरा नहीं दिखा। मुम्बई प्रवासी मुकुलभाई एक अच्छे कार्यकर्ता थे। उन्हें गुजराती समाज का स्तम्भ कहा जा सकता है। वे चले गए, किन्तु पीछे परिवार और गुजराती समाज में से उनके जैसे अच्छे कार्यकर्ता सामने आते रहें।'

पूज्यवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त टापरा से बाव तक के यात्रापथ की घोषणा की। कार्यक्रम में मुनि विजयकुमारजी ने गीत का संगान किया। श्री अशोक सिंघवी ने अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ किशोर मण्डल, जसोल द्वारा भरवाए गए आतिशबाजी प्रत्याख्यान के ७४४ संकल्प पत्र पूज्यवर को भेंट किए गए।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह का शिलान्यास

१५ नवम्बर। कार्तिक शुक्ला द्वितीया। नवमाधिशास्ता अणुव्रत प्रवर्तक परम पूज्य आचार्य तुलसी का ९९वां महाप्रयाण दिवस। प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में तेरापंथ महिला मण्डल, जसोल ने गीत का संगान किया। साध्वियों ने गीत के द्वारा गुरुदेव तुलसी के प्रति अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। समणीवृंद ने समूहस्वर में समणश्रेणी के जन्मदाता के प्रति भावांजलि अर्पित की। शासनश्री मुनि किशनलालजी, शासनश्री साध्वी यशोधराजी तथा समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी ने भावोद्गार व्यक्त किए। शासनश्री साध्वी कमलश्रीजी आदि साध्वियों ने गीत का संगान किया। मुनि जयकुमारजी ने विचाराभिव्यक्ति दी तथा परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी द्वारा लिखित 'धर्मचक्र का प्रवर्तन' नामक आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त का परिवर्धित संस्करण व 'कल्याण मन्दिरः अंतस्तल का स्पर्श' नामक नवीन कृति पूज्यवर के करकमलों में उपहृत की।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित राजस्थान के राजस्व मंत्री श्री हेमाराम चौधरी ने अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतमचन्द सालेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष तथा आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति के संयोजक श्री हीरालाल मालू ने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष की कार्ययोजना प्रस्तुत करते हुए अन्य कार्यकर्ताओं के साथ आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष का प्रतीक चिन्ह, कार्ययोजना का परिपत्र,

अणुव्रत संकल्प पत्र तथा मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी द्वारा अंग्रेजी भाषा में लिखित आचार्य तुलसी की परिचयात्मक पुस्तक 'आचार्य तुलसी : द लीजेंड ऑफ ह्यूमिनिटी' पूज्यवर को समर्पित की। आचार्यवर ने प्रतीक चिन्ह, परिपत्र, अणुव्रत संकल्प पत्र और पुस्तक को लोकार्पित किया। सुश्री स्नेहा लूंकड़ ने हस्तनिर्मित कृति पूज्य चरणों में भेंट की। मुख्यनियोजिकाजी ने आचार्य तुलसी के महान व्यक्तित्व के विषय में सारगर्भित विचार व्यक्त किए।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने संभाषण में कहा--'आचार्य तुलसी एक महापुरुष थे, महान् आचार्य थे, महान व्यक्तित्व के धनी थे। महत्ता के तीन रूप होते हैं-नैसर्गिक, अर्जित और आरोपित। ऐसा कहा जा सकता है कि आचार्य तुलसी की महत्ता नेसर्गिक थी, वे जन्म से ही महान् थे। मुनि जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ही उनकी महत्ता उभरकर सामने आई। उन दिनों वे बांसुरी महाराज, मास्टर महाराज और शौकीन महाराज के नाम से भी जाने जाते थे। संगीत की नैसर्गिक प्रतिभा के कारण वे बासुंरी महाराज कहलाने लगे। प्रारंभ से उनकी अध्यापन में रुचि थी। उन्हें दीक्षा लिए तीन वर्ष भी पूरे नहीं हुए और एक नवदीक्षित मुनि के अध्यापन का दायित्व उन्हें सौंपा गया। धीरे-धीरे उनके विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती गई ओर तुलसी पोशाल बन गई। तेरापंथ धर्मसंघ का दर्शन के क्षेत्र में प्रवेश हुआ, इसका श्रेय गुरुदेव तुलसी को जाता है। उनके ९९वें जन्मदिवस पर उनके प्रति अपनी सश्रद्धा विनम्र वन्दना अर्पित करती हूं।'

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आज एक ऐसे महापुरुष का जन्मदिन है, जिन्होंने जनता को सुख की राह दिखाने का प्रयत्न किया। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी बीसवीं सदी के एक महापुरुष थे। उन्होंने अपने जीवन में ऐसा कुछ किया, जो तेरापंथ शासन, जैन शासन और मानवजाति के लिए कल्याणकारी हुआ। आज उनका ९९वां जन्मदिवस है। ठीक एक वर्ष बाद उनका जन्म शताब्दी वर्ष प्रारंभ होने वाला है। जन्म शताब्दी के संदर्भ में अनेक-अनेक कार्य प्रकल्पित हैं। उनमें दो कार्य अतिमहत्त्वपूर्ण हैं-महाव्रत और अणुव्रत का। मैंने संकल्पना की है कि सन् २०१४ की कार्तिक शुक्ला द्वितीया तक धर्मसंघ में सौ मुनि दीक्षाएं हो जाएं। इसके लिए प्रयास चल रहा है। साधु-साध्वियां और समणश्रेणी भी इस कार्य के लिए प्रयत्नशील हैं। श्रावक समाज का यथोचित योगदान भी इसमें है। अभिभावकों के योगदान के बिना यह कार्य संभव भी नहीं है। हम इस लक्ष्य की दिशा में द्रुतगति से आगे बढ़ें।

दूसरे महत्त्वपूर्ण कार्य अणुव्रत के संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कहा--'हम आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के संदर्भ में ज्यादा से ज्यादा लोगों को अणुव्रती बनाने का प्रयत्न करें। जन्म शताब्दी के संदर्भ में होने वाला अणुव्रत का कार्य आज से प्रारंभ हो रहा है, इसलिए आज से सन् २०१४ की कार्तिक शुक्ला द्वितीया तक अणुव्रत के ग्यारह नियमों को स्वीकार करने वाले व्यक्तियों की गणना जन्मशताब्दी के संदर्भ में होने वाले अणुव्रत कार्य के अंतर्गत की जाए। इस काल में अणुव्रत का कार्य सघनता के साथ आगे बढ़ना चाहिए। मैं परम पूज्य गुरुदेव तुलसी को श्रद्धा के साथ याद करते हुए इस सघन कार्यक्रम का लोकार्पण कर रहा हूं।'

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी के प्रतीक चिह्न और कार्ययोजना परिपत्र के संदर्भ में पूज्यवर ने कहा--'आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी का प्रतीक चिह्न उपहृत किया गया। यह देखने में बड़ा सुन्दर है। हरी पत्तियां मानो आंखों को शांति देने वाली हैं। जन्म शताब्दी समारोह समिति की ओर से उपहृत इस प्रतीक चिह्न को बड़े उल्लास के साथ स्वीकार कर रहा हूं। गुरुदेव तुलसी की जन्मशताब्दी के संदर्भ में कार्ययोजना का छोटा-सा पत्रक आया है। यह छोटा है, किन्तु बहुत महत्त्वपूर्ण है। यों कहना चाहिए कि जन्मशताब्दी का आधारभूत पत्रक है। इससे योजनाओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है और कार्यों को समुचित

रूप में आगे बढ़ाया जा सकता है। इसे भी मैं बड़ी सात्त्विक पवित्र भावना के साथ स्वीकार कर रहा हूं।'

'धर्मचक्र का प्रवर्तन' पुस्तक के विषय में उद्‌गार व्यक्त करते हुए आचार्यवर ने कहा--'परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी द्वारा निर्मित 'धर्मचक्र का प्रवर्तन' बहुत महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। गुरुदेव का जीवनवृत्त, जो उनके उत्तराधिकारी द्वारा लिखित है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के बारे में इस पुस्तक से अच्छी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। पुस्तक के परिवर्धित संस्करण को मैं बड़ी पवित्र भावना के साथ स्वीकार कर रहा हूं।' 'आचार्य तुलसी : द लीजेंड ऑफ ह्यूमिनिटी' कृति के विषय में पूज्यवर ने कहा--'आचार्य तुलसी के बारे में यह पुस्तिका मुख्यनियोजिकाजी द्वारा प्रस्तुत की गई है। गुरुदेव तुलसी के बारे में अंग्रेजी में जानकारी देने के लिए इस पुस्तक का अच्छा उपयोग हो सकेगा।'

आज के कार्यक्रम को आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी का शिलान्यास बताते हुए आचार्यवर ने कहा--'आज हम बड़ी सघनता के साथ जन्मशताब्दी की पृष्ठभूमि का प्रारंभ कर रहे हैं। प्रतीकचिह्न कार्ययोजना, जीवनवृत्त आदि प्रस्तुत किए गए। मानों जन्म शताब्दी के महल का आज शिलान्यास कर दिया गया। हीरालालजी मालू जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष होने के नाते आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समिति के संयोजक हैं, बड़ा श्रम कर रहे हैं, कितने कार्यकर्ता भी साथ लगे हुए हैं। सभी कार्यकर्ता अपनी शक्ति का पवित्र कार्यों में नियोजन करते रहें।'

समणश्रेणी के स्थापना दिवस पर आशीर्वाद प्रदान करते हुए पूज्यवर ने कहा--'आज समणश्रेणी का जन्मदिन है। गुरुदेव तुलसी ने वि.सं. २०३७ में इस श्रेणी के रूप में एक नई श्रेणी का प्रारंभ किया। इस श्रेणी के द्वारा विभिन्न रूपों में सेवाएं प्राप्त हो रही हैं। विद्या के क्षेत्र में समणियों की बड़ी सेवा है। जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्व विद्यालय के अध्यापन कार्य में समणियों का बड़ा योगदान है। साधु-साध्वियों की भिन्न समाचारी में चिकित्सकीय सेवा की दृष्टि से भी समणश्रेणी का योगदान है। श्रावक समाज की सार-संभाल और अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान आदि के कार्य में भी इस श्रेणी का योगदान प्राप्त है। समणश्रेणी का खूब आध्यात्मिक विकास होता रहे। समणी ऋजुप्रज्ञाजी समणी नियोजिका के रूप में समणश्रेणी के देखरेख का कार्य कर रही है। मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी समणियों की व्यवस्था, मार्गदर्शन, प्रबंधन देखरेख में वर्षों से योगदान दे रही है। साध्वीप्रमुखाजी का संरक्षण प्रारंभ से इस श्रेणी को प्राप्त है। इस श्रेणी ने गुरुओं की कृपा से विकास किया है और आगे विकास होता रहे, उन्नति होती रहे।'

परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी की नवीन कृति के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'मुझे स्मरण हो रहा है कि गुरुदेव महाप्रज्ञजी जब श्रीडूंगरगढ़ में विराज रहे थे, तब गुरुदेव के प्रवचन से पूर्व समणियां कल्याण मन्दिर के दो-दो श्लोक बोला करती थीं, और गुरुदेव उन श्लोकों पर व्याख्यान करते। 'कल्याण मन्दिर अंतस्तल का स्पर्श' उन प्रवचनों का संपादित रूप है। 'कल्याण मन्दिर' में रुचि रखने वालों के लिए यह ग्रन्थ अच्छा उपयोगी बन सकेगा। हम इसे सम्मान के साथ स्वीकार कर रहे हैं।'

कार्यक्रम के अन्त में चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री शांतिलाल भंसाली ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

आज रात्रि में 'काव्य-संध्या' का समायोजन हुआ। जिसमें मुनिवृन्द ने काव्य प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम का काव्यमय संचालन मुनि कुमारश्रमणजी ने किया। मुनिवृन्द की रोचक प्रस्तुतियों ने बड़ी संख्या में उपस्थित जनता को अंत तक बांधे रखा।

अहिंसा प्रशिक्षण अधिवेशन परिसंपन्न

१६ नवम्बर। परम पूज्य आचार्यवर की मंगल सन्निधि में राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान

के तत्त्वावधान में समायोजित द्विदिवसीय अहिंसा प्रशिक्षक अधिवेशन परिसंपन्न हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में संस्थान के अध्यक्ष श्री भीखमचन्द नखत ने भावाभिव्यक्ति देते हुए अहिंसा प्रशिक्षकों की ओर से विविध संकल्प पूज्यवर को समर्पित किए गए। श्री अर्जुन मेड़तवाल ने पूज्यवर की कृति 'सुखी बनो' पर आधारित स्वरचित मुक्तकों की लघुकृति 'सुख-सरिता' पूज्यवर को भेंट की। सहसंयोजक श्री धर्मचन्द जैन, सहसंयोजक प्रो. साधुशरणसिंह सुमन ने विचार व्यक्त किए। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र टमकोर के प्रशिक्षक श्री रमेशजी नगर, हैदराबाद केन्द्र के प्रशिक्षक श्री ललित किशोर ने अपने केन्द्र की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के अवसर पर राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान द्वारा एक करोड़ नशामुक्ति संकल्प पत्र उपहृत करने का संकल्प आज संस्थान द्वारा अवशिष्ट १५ लाख संकल्प पत्र पूज्यवर के श्रीचरणों में उपहृत कर पूरा किया गया।'

परम श्रद्धास्पद आचार्यवर ने अपने मंगलप्रवचन में कहा--'दुनिया में हिंसा और अहिंसा दोनों विद्यमान हैं। दोनों परस्पर विरोधी तत्त्व हैं। हिंसा बढ़ने से अहिंसा में कमी आ जाती है। उस कमी को पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। यदि अहिंसा का उपदेश, प्रशिक्षण दिया जाता है तो अहिंसा को वृद्धिगंत होने का अवसर मिल जाता है। हिंसा का मार्ग व्यक्ति को दुःख की ओर ले जाता है। वह दुःख का एक बड़ा कारण है। हिंसा करने वाला व्यक्ति स्वयं के लिए भी दुःख तैयार कर लेता है और तात्कालिक रूप में दूसरों को भी दुःखी बना सकता है। अहिंसा सुख का मार्ग है।' पूज्यवर ने आगे कहा--'यदि अहिंसा प्रशिक्षण चलता है तो अहिंसा वृद्धिंगत हो सकती है। कितने-कितने कार्यकर्ता अहिंसा प्रशिक्षण के कार्य में लगे हुए हैं। अज्ञान, आवेश और अभाव हिंसा के कारण बन सकते हैं। कषाय का आवेश व्यक्ति को हिंसा की ओर धकेल सकता है। हमारी दुनिया में हिंसा की शक्ति है तो अहिंसा की परम शक्ति है। व्यक्ति का संकल्प हो कि मैं अपने जीवन में अहिंसा का विकास करूं। हिंसा के कारणों को निवारित कर अहिंसा को प्रतिष्ठित किया जा सकता है। हिंसा कुछ समय के लिए भले हो जाए, आखिर अहिंसा की शरण में आना ही पड़ता है। परिवारों, समाजों, सम्प्रदायों, राष्ट्रों और विश्व में शांति रहे, इसके लिए अहिंसा आवश्यक है। अहिंसा है तो शांति है, सुख है। हम सभी में अहिंसा की प्रतिष्ठा हो और रहे।'

उपहृत नशामुक्ति संकल्प पत्रों के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'हिंसा का एक कारण नशा भी बन सकता है। नशा करने वाला स्वयं और दूसरों के दुःख का कारण बन सकता है। शारीरिक, मानसिक, आर्थिक आदि अनेक समस्याओं का कारण नशा बन सकता है। उससे मुक्त रहने का प्रयास करना चाहिए। अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान ने भी नशामुक्ति के संदर्भ में कितना कार्य किया है। एक करोड़ व्यक्तियों को नशामुक्ति का संकल्प करवाना बहुत अच्छा है, बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य है।'

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित राजस्थान विधानसभा की पूर्व उपाध्यक्ष तथा महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती तारा भण्डारी ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। दिल्ली दूरदर्शन व आकाशवाणी के कार्यनिवृत्त डायरेक्टर जनरल श्री मधुकर लेले ने अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए।

द्विदिवसीय अहिंसा प्रशिक्षक अधिवेशन के दौरान विभिन्न अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों के अंतर्गत गतिमान अहिंसात्मक रोजगार केन्द्रों में निर्मित सामग्री की प्रदर्शनी वीतराग समवसरण में लगाई गई। परमाराध्य आचार्यवर ने आज प्रातः प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

सूरत चतुर्मास की पुरजोर प्रार्थना

'आचार्यश्री महाश्रमण सूरत पधारो यात्रा' नामक संघ के अंतर्गत सूरत से करीब २००० व्यक्ति

१५ नवम्बर को परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में पहुंचे। १६ नवम्बर को प्रातः समायोजित रैली गांव की विभिन्न गलियों से होती हुई वीतराग समवसरण में पहुंची। श्रावक-श्राविकाओं ने बुलन्द घोषों के माध्यम से अपने आराध्य को सूरत पदार्पण और पावस करने की प्रार्थना की। प्रवचन कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, सूरत के अध्यक्ष श्री विमल राठौड़, मंत्री श्री प्रकाश डाकलिया ने संपूर्ण सूरत की ओर से पूज्यवर से सूरत में पावस फरमाने की पुरजोर प्रार्थना की। ज्ञानशाला सूरत द्वारा इस संदर्भ में प्रस्तुति दी गई। श्री प्रवीण भाई मेहता ने भावाभिव्यक्ति दी। 'सूरत की सीरत बदलने महाश्रमण, बक्साओ हमको चातुर्मास' सुमधुर गीत के द्वारा श्रावक समाज ने बलवती भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ किशोर मंडल, सूरत द्वारा तेरापंथ भवन, सूरत का मॉडल प्रस्तुत किया गया तथा आतिशबाजी प्रत्याख्यान के ५०१ संकल्प पत्र पूज्यवर को समर्पित किए गए।

पूज्यवर ने सूरत की प्रार्थना के संदर्भ में कहा--'सूरत से विराट श्रावक-श्राविका समाज उपस्थित हुआ है। वहां मुनिश्री सुरेशकुमारजी स्वामी और उधना में मुनि भूपेन्द्रकुमारजी का चातुर्मास है। लोग इतनी बड़ी संख्या में आए हैं, किन्तु अभी तो हमारी दिशा पूर्वांचल की ओर है। उसके बाद इच्छा है कि सब अनुकूलता रहती है तो दक्षिणांचल जाना है, यों कई वर्ष हो जाते हैं। गुरुदेव महाप्रज्ञजी के साथ मैं सूरत जा चुका हूं और चतुर्मास भी कर चुका हूं, इसलिए वहां जाने की क्या जल्दी? आपकी भावना गजब की है, अच्छी है। लेकिन अभी ये बहुत आगे की बात है। आपने अपनी भावना का शिलान्यास कर दिया। आगे की बात आगे देखते हैं।'

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, सूरत के तत्त्वावधान में विराट संघ १५-१७ नवम्बर जसोल में रहा। इस दौरान श्रावक-श्राविकाओं को पूज्यवर की समुपासना का सौभाग्य संप्राप्त हुआ। आचार्यवर ने उन्हें पावन संबोध भी प्रदान किया। १६ नवम्बर की रात्रि में ज्ञानशाला सूरत ने पूज्यवर की पावन सन्निधि में अपनी प्रस्तुति दी। संघ को महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी से भी प्रेरणा प्राप्त हुई।

सापेक्ष अर्थशास्त्र पर द्विदिवसीय सम्मेलन

१७ नवम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यवर की मंगल सन्निधि में आज प्रातः उत्तरप्रदेश के राज्यपाल श्री बी.एल. जोशी समुपस्थित हुए। पूज्यवर का उनके साथ विविध विषयों पर वार्तालाप हुआ। आज से आचार्यवर के पावन सान्निध्य में 'जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय' तथा 'सापेक्ष अर्थशास्त्र रिचर्स इंस्टीट्यूट' के संयुक्त तत्त्वाधान में 'संतुलित एवं सुस्थिर विकास में सापेक्ष अर्थशास्त्र की भूमिका' विषय पर सातवां द्विदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन प्रारंभ हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में मुनि जम्बूकुमारजी (मिंजूर) ने गीत का संगान किया। आगममनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की उपकुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री बी.एस. राजपूत, चैन्नई के रामानुज मिशन ट्रस्ट के प्रधान श्री चतुर्वेदी स्वामी ने सापेक्ष अर्थशास्त्र के संदर्भ में सारगर्भित विचार व्यक्त किए। चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतमचन्द सालेचा, महामंत्री श्री शांतिलाल भंसाली ने भावाभिव्यक्ति दी। कानपुर से समागत श्री टीकमचन्द सेठिया ने राज्यपाल महोदय का परिचय प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तरप्रदेश के राज्यपाल बी.एल.जोशी ने अपने अभिभाषण में कहा--'वर्तमान में भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व पर संकट के बादल हैं तथा पूरी दुनिया समस्याओं से जूझ रही है। आज भोग-उपभोग की कोई सीमा नहीं है। कुछ लोगों के पास अपार धन वैभव है तो कुछ मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित हैं। भगवान महावीर के दर्शन व सिद्धान्तों को अपनाने से विश्व अनेक समस्याओं से निजात पा सकता है। आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ केवल धार्मिक संत ही नहीं थे। उन्होंने अपनी प्रज्ञा

से समाज को एक नया दर्शन व चिन्तन दिया। वर्तमान में आचार्य महाश्रमणजी उनके चिन्तन व दर्शन को आगे बढ़ा रहे हैं।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'अर्थ की उपयोगिता है। उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। पदार्थ भोगपभोग का विषय है, किन्तु हम पदार्थ को ही सब कुछ न मान लें। व्यक्ति संयम को जीवन में अपनाए। हर क्रिया करते हुए व्यक्ति चिन्तन करे कि मेरे उपभोग से दूसरों का हनन न हो। आज एक ओर अभाव तो दूसरी ओर अतिभाव है। इच्छाओं के परिसीमन द्वारा समस्याओं का समाधान पाया जा सकता है।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'अर्थशास्त्र के संदर्भ में सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व है--आदमी। आदमी का चिन्तन क्रिया-कलाप सब कुछ अर्थ को प्रभावित करता है। वही अर्थशास्त्र सफल हो सकता है जहां पर्यावरण को खतरा न हो। पर्यावरण को प्रदूषित कर किसी का हित नहीं साधा जा सकता। आज उत्पादन और मुनाफा ये दो ही चीजें मुख्य हो रही हैं। इससे सारा आर्थिक ढ़ांचा गड़बड़ा गया। भगवान महावीर का अर्थशास्त्र अर्थ की विसंगतियों को दूर कर सकता है।'

परम पूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'इच्छा को आकाश के समान अनंत कहा गया है। असीम इच्छाएं व्यक्ति को अपराध की ओर धकेल सकती हैं। इसलिए व्यक्ति को इच्छाओं का संयम करना चाहिए। श्रावक के बारहव्रतों में पांचवां है--इच्छा परिमाण व्रत। गार्हस्थ्य में अर्थ की अपेक्षा होती है। वह कोई बुरी चीज भी नहीं होती, किन्तु अर्थ के प्रति अति आसक्ति और अति महत्त्वाकांक्षा हितकर नहीं होती। समाज के लिए अर्थनीति भी जरूरी होती है। अर्थनीति के बिना समाज की व्यवस्था सम्यक् नहीं चल सकती।

विकास का चतुष्कोण प्रस्तुत करते हुए पूज्यवर ने कहा--किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए चार विकास अपेक्षित होते हैं--'भौतिक विकास, आर्थिक विकास, नैतिक विकास और आध्यात्मिक विकास। प्रथम दो तत्त्व विकास का अधूरा पक्ष है। सर्वांगीण विकास के लिए नैतिक और आध्यात्मिक विकास भी आवश्यक होते हैं। अर्थार्जन में यथासंभव प्रामाणिकता रहनी चाहिए। अप्रमाणिकता से करोड़ों-अरबों भी कमा लेना कोई महत्त्वपूर्ण नहीं है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से नैतिकता का संदेश दिया। अर्थ के अर्जन में प्रामाणिकता और उपयोग में संयम व विवेक की आवश्यकता है।' आचार्यवर ने आगे कहा--'भारत ऋषि-मुनियों का देश है। यहां के नागरिकों में आध्यात्मिक विकास भी रहना चाहिए। परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने सापेक्ष अर्थशास्त्र का प्रकल्प प्रस्तुत किया। अर्थ जीवन यापन का एक साधन है, किन्तु उसके साथ प्रामाणिकता, विवेक व संयम ये तीन तत्त्व रहते हैं तो अर्थ की सार्थकता हो सकती है।'

कार्यक्रम का संचालन श्री बजरंग जैन ने किया। सापेक्ष अर्थशास्त्र पर आधारित द्विदिवसीय सम्मेलन में करीब सवा सौ व्यक्ति संभागी बने। उद्‌घाटन, समापन तथा खुला सत्र के अतिरिक्त पांच तकनीकी सत्रों में ४१ परिपत्र पढ़े गए। साधु-साध्वियों में आगम मनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि मननकुमारजी, मुनि अभिजितकुमारजी, मुनि जागृतकुमारजी, मुख्यनियोजिकाजी, साध्वी प्रसन्नयशाजी, साध्वी चारित्रयशाजी, समणी रोहितप्रज्ञाजी और समणी विनयप्रज्ञाजी के वक्तव्य हुए।

उत्तरप्रदेश के राज्यपाल श्री बी. एल. जोशी के अतिरिक्त सम्मेलन में रामानुज मिशन ट्रस्ट चैन्नई के चतुर्वेदी स्वामी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख सलाहकार श्री बजरंगलाल गुप्ता, गुजरात विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति श्री बी.ए. प्रजापति, जयनारायण विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री बी.एस. राजपूत, तथा जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की उपकुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी की गरिमापूर्ण उपस्थिति रही।

मूल्य पवित्रता का

१८ नवम्बर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमाराध्य आचार्यवर ने रविवारीय विशेष प्रवचन श्रृंखला के अंतर्गत 'मूल्य पवित्रता का' विषय पर प्रवचन करते हुए कहा--'पवित्रता या शुचिता का बहुत मूल्य है। कपड़ा निर्मल अच्छा लगता है। श्वेत वस्त्र पर खून, कीचड़ रूपी गंदगी के धब्बे हों तो असुहाना लगने लगता है। सभ्य व शिष्ट व्यक्ति का यह लक्ष्य रहना चाहिए कि वह गंदगी के धब्बों को यथाशीघ्र साफ करे। यह बाह्य शुचिता है। आंतरिक शुचिता का अपना महत्त्व है। आंतरिक शुचिता व पवित्रता के चार उपाय व आयाम हैं।' पवित्रता के चार आयामों को व्याख्यायित करते हुए आचार्यवर ने कहा--'मनुष्य में ईमानदारी के प्रति आस्था रहनी चाहिए, यह पहला आयाम है। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के संदर्भ में अणुव्रत का कार्यक्रम इसी १५ नवम्बर से प्रारम्भ कर दिया है। अणुव्रत का एक मुख्य सिद्धान्त है व्यवसाय आदि में प्रामाणिकता। व्यापारिक केन्द्रों पर ईमानदारी की देवी विराजमान रहे। ग्राहक के साथ धोखाधड़ी न हो, लेनदेन में सत्यता स्थापित रहे। झूठ बोलना कई पापों की जड़ है। व्यक्ति यदि असत्य संभाषण का परिहार कर दे तो संभवतः अनेक बुराइयों से बच सकता है। प्रामाणिकता के आदर्श पर चलने वाली दुकान मन्दिर सदृश बन जाती है।'

पवित्रता के अन्य आयामों की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'पवित्रता का दूसरा आयाम है अहिंसा। इसके सम्यग् परिपालन हेतु व्यक्ति आवेश से बचे, अपशब्दों से बचे। आवेश करना तो एक बीमारी है। बात-बात में जो गुस्सा करते हैं व गाली-गलौच करते हैं उन बेचारों को तो कोई आध्यात्मिक दवा दी जानी चाहिए। कहीं पर भी गड़बड़ व दंगा फसाद न हो, झगड़ा व कलह न हो, पारिवारिक हिंसा न हो। गुस्से पर नियंत्रण हो। पवित्रता का तीसरा आयाम है नशामुक्ति। नशा परिवार में भारी समस्या पैदा करने वाला हो सकता है। धार्मिक साधना चौथा आयाम है। सामायिक एक महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान है। कोई व्यर्थ की रूढ़ि नहीं है। अच्छी बात सुनते हैं, पढ़ते हैं तो ब्रेन वासिंग हो सकती है। खराब बात सुनने व पढ़ने वाले का तो दिमाग कचरा घर बन सकेगा।

सिवांची-मालाणी स्तरीय संस्कार संवर्धन सम्मेलन को उपयोगी बताते हुए आचार्यवर ने कहा--'घरों व व्यावसायिक केन्द्रों पर भगवान महावीर, आचार्य भिक्षु, गुरुओं के चित्र लगे रहते हैं तो सहज संस्कार आ सकते हैं। बच्चों में भी अच्छे संस्कार पल्लवित रहे, यह अपेक्षित है।' तेरापंथ युवक परिषद्, जयपुर द्वारा आयोजित पचास दंपतियों की नशामुक्ति रैली प्रातः निकाली गई। रैली के संदर्भ में पूज्यप्रवर ने कहा--'जयपुर के युवकों और बाइयों ने नशामुक्ति रैली आयोजित की है। सबके परिवारों में नशामुक्तता रहे। आस-पास में नशामुक्तता का वातावरण निर्मित करें।' सूरत के कार्यकर्ताओं द्वारा आचार्य तुलसी शताब्दी के अवसर पर प्रस्तावित दो योजनाओं के बारे में आचार्यवर ने कहा--'इनकी दो योजनाएं मुझे अच्छी लगी। पहली बच्चों के स्तर में अनुरूप साहित्य का निर्माण करना व दूसरी आचार्य तुलसी की कथा का सृजन करना जिसे जगह-जगह सुनाई जा सके। विस्तार से यह योजना सामने आने पर हम देख सकते हैं।' कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ।

पल्लावरम्-चेन्नई से समागत चचेरी बहिनें हेमश्री एवं प्रज्ञा भंसाली ने आचार्यवर से मंगलपाठ का श्रवण कर पारमार्थिक शिक्षण संस्था में उपासिका के रूप में प्रवेश लिया। इसी के साथ उपासिकाओं की संख्या अठाईस हो गई है।

गुलाबबाग से समागत सत्तर व्यक्तियों के संघ की ओर श्री चांदरतन ने बिहार में घोषित मर्यादा महोत्सव गुलाबबाग में करवाने की प्रार्थना की। भीनासर संघ की ओर से श्री महेन्द्र बैद ने भीनासर पदार्पण व वहां दीक्षा महोत्सव आयोजित करवाने की अर्ज की। उत्तरहावड़ा सभा द्वारा आयोजित अध्यात्म ज्योति यात्रा में समागत दो सौ पेंसठ भाई-बहिनों की ओर उत्तर हावड़ा के अध्यक्ष श्री तेजकरण बोथरा

ने कोलकाता पदार्पण के समय एक माह प्रवास हावड़ा में करवाने की प्रार्थना की। तेयुप-जयपुर द्वारा साध्वी अणिमाश्रीजी, साध्वी मंगलप्रज्ञाजी की प्रेरणा से भरे गए १९१ गुरुधारणा फार्म श्री अविनाश नाहर, श्री पन्नालाल पुगलिया, श्री विकास जैन ने पूज्यवर को भेंट किए। इसके साथ नशामुक्ति के फार्म भी भेंट किए गए। इस संदर्भ में परिषद् के मंत्री श्री गौतम मेहता ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

सिवांची-मालाणी क्षेत्रीय तेरापंथ संस्थान द्वारा आयोजित द्विदिवसीय संस्कार संवर्धन सम्मेलन के संदर्भ में मुनि जिनेशकुमारजी, संस्थान के अध्यक्ष श्री पूनमचन्द चौपड़ा, बाड़मेर के उप जिला कलेक्टर श्री ओमप्रकाश जैन ने अपने विचार रखे।

सम्मेलन में रात्रि में प्रदत्त अपने विशेष उद्‌बोधन में आचार्यवर ने संस्कारों को अमूल्य संपदा बताते हुए सामायिक, स्वाध्याय आदि की साधना करने व बच्चों में अच्छे संस्कार भरने का आह्‌वान किया। सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में मुनि उदितकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि पृथ्वीराजजी (जसोल), मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि नीरजकुमारजी, मुनि जम्बूकुमारजी (मिंजूर) ने विषयबद्ध प्रशिक्षण दिया। संस्थान के मंत्री श्री गौतम बैदमुथा ने आभार ज्ञापन किया। सम्मेलन के प्रायोजक थे श्री भेरचन्द नारायणचन्द गोगड़। सम्मेलन में दक्षिण भारत, गुजरात आदि विभिन्न क्षेत्रों में प्रवासित सिंवाची-मालाणी के सैंकड़ों व्यक्तियों सहित सिवांची-मालाणी के ६३७ व्यक्ति संभागी बने।

रात्रि में तेरापंथ युवक परिषद्, जसोल द्वारा कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन में गीतकार डॉ. कविता किरण (फालना), हास्यकवि राकेश शर्मा (बदनावर), हास्यकवि श्री सम्पत सरल (जयपुर), ओजस्वी कवि श्री शशिकांत (देवास), गीतकार कुंवर जावेद (कोटा) ने शानदार प्रस्तुति दी। कवि श्री शशिकांत यादव ने काव्यमय संचालन किया। तेयुप के अध्यक्ष श्री रमेश भंसाली ने स्वागत किया। सम्मेलन में उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

बड़ा उपकार है अजीव का

१९ नवम्बर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में जीव तत्त्व भी है और अजीव तत्त्व भी है। जीव दो, चार नहीं अनंत है। अजीव भी संसार में अपार है। इसका दुनिया में कम महत्त्व नहीं है। इसके बिना तो ढांचा ही चरमरा जाता है। अजीव मूर्त्त और अमूर्त्त दोनों होते हैं। अजीव के पांच भेदों--धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल और पुदगलास्तिकाय में प्रथम चार अमूर्त हैं, क्योंकि उनमें रूप व दृश्यता है ही नहीं। पुद्‌गल मूर्त्त है। कुछ पुद्‌गलों को देखा जा सकता है, जबकि कुछ चक्षु का विषय नहीं बनते।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'हमारा जीवन जीव व अजीव का संगम है। आत्मा व शरीर का योग है। शरीर नश्वर है, आत्मा शाश्वत है। हमारा जीवन पुद्‌गल सापेक्ष है। इस दृष्टि से अजीव का हमारे पर बड़ा उपकार है। भोजन, कपड़ा, मकान निर्जीव है। सूक्ष्मता में जाएं तो चलने में भी अजीव का बल चाहिए। धर्मास्तिकाय ऐसा तत्त्व है जिसके बिना एक अंगुली भी नहीं हिल सकती। अधर्मास्तिकाय स्थिर रहने, आकाशास्तिकाय स्थान देने वाला तत्त्व है। काल समय है। हम क्षण-क्षण, समय-समय अजीव का सहयोग ले रहे हैं। पदार्थ की भी आशातना व अवहेलना नहीं होनी चाहिए। कर्म भी अजीव है। सुख-दुःख कर्म सापेक्ष है।'

आगमों में विवेचित स्वर्ग, नरक के वर्णन की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'वर्षों पूर्व स्वर्ग, नरक के चित्र दिखाए जाते थे। आजकल भी दिखाए जाते है। पापबंधन करने वालों को नरक में कितना दुःख पाना पड़ता है। ऐसा वर्णन पढ़ने व सुनने से प्रेरणा मिल सकती है। मोह को विगलित करने में अनित्य अनुप्रेक्षा की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए पूज्यवर ने कहा--'बारह भावनाओं में पहली अनित्य

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 24-11-2012 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

अनुप्रेक्षा है। इससे शरीर, परिवार आदि के संदर्भ में अनित्यता का अवबोध होता है। मृत्यु शाश्वत नियम है, वह चाहे प्राकृतिक हो या फिर बीमारी व दुर्घटना से, यह एक अवश्यंभावी स्थिति है। आत्मा स्थायी है। पर परिवार, पैसा, प्रसिद्धि अनित्य है। जब सब अनित्य है तो मूर्च्छा किसलिए? अनित्य अनुप्रेक्षा से मोह को विच्छिन्न करने का प्रयास करें। चिन्तन धारा प्रशस्त रहे, जिससे चेतना में विरक्ति का भाव पुष्ट होता रहे।'

कार्यक्रम में मंत्रीमुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ। अहमदाबाद के श्री मदनलाल कोठारी का पिछले दिनों निधन हो गया। उनके परिजन संबल प्राप्ति हेतु गुरु चरणों में पहुंचे। आचार्यवर ने प्रसंगवश कहा--'मदनजी कोठारी अहमदाबाद तेरापंथी सभा के अध्यक्ष रहे। गजपुर-घाटा के मेवाड़ी श्रावक थे। शाहीबाग स्थित तेरापंथ भवन से भी जुड़े हुए थे। मदनजी अच्छे वक्ता थे, वे बुद्धिमान व समझदार कार्यकर्ता लगे। सभी अनित्यता का बोध पाठ समझें। उनसे जुड़े परिवार हिम्मत बनाए रखें।'

आज रात्रि में जसोल कन्या मंडल द्वारा 'धन्ना-शालिभद्र' पर परिसंवाद के रूप में शानदार प्रस्तुति दी गई।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

३१००/- स्व. श्रीमती सिरेकंवरी चोरड़िया (धर्मपत्नी स्व. मोतीलाल चोरड़िया, टमकोर-खारूपेटिया) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू निर्मल-मंजु, अशोक-पुखराज, विनोद-पुष्पा, सुपौत्र व पौत्रवधू दीपक-पूनम, मनीष-मनीता, मुकेश-विनीता चोरड़िया द्वारा प्रदत्त।

२५००/- स्व. श्री पन्नालालजी कोठारी (चूरू-कोलकाता) की पुण्य स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती किरणदेवी सुपुत्र व पुत्रवधू पृथ्वीराज-मीनू, कमल-आशा, निर्मल-चन्दा, सुपौत्र हर्ष, मयंक, प्रपौत्र सोहम कोठारी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती बदामबाई गादिया (धर्मपत्नी श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. श्री ओकचन्दजी गादिया, गुड़ारामसिंह-चिकमगलूर) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र मनोरथमल, मदनलाल, जयप्रकाश, शान्तिलाल, सुरेन्द्रकुमार, पुष्पराज एवं समस्त गादिया परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री पुरखचन्दजी डागा (श्रीडूंगरगढ़) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र मांगीलाल, विजयराज, नोरतमल, विमलकुमार डागा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. लाला बलबीरसिंह जैन (हांसी) की चौथी पुण्य तिथि पर उनके सुपुत्र विनोद जैन (अध्यक्ष तेयुप, हांसी) द्वारा-बोम्बे टायर हाउस हांसी।

२१००/- श्री माणकचन्द-लक्ष्मीदेवी पारख (चूरू-मुम्बई) के विवाह की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्णजयंती) के उपलक्ष में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू अरविन्द-रीटा, प्रकाश-शीप्रा, निरज-रचना, सुपौत्र आकाश, नमन, आरीयन, अरनव, विहान, मुदित पारख द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता—

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, पो. जसोल-३४४०२४ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ६६८००५५३८१, ६३५२४०४६४१

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**